

पद चालीस का गुप्त इतिहास - संख्या सात

ग्यारह और बाईस

Jeff Pippenger

2026-04-04

दानियेल अध्याय ग्यारह के पद सोलह और पद बाईस दोनों ही शीघ्र आने वाले रविवार-व्यवस्था के साथ मेल खाते हैं। पद दस की 1989 में हुई पूर्ति 2014 के यूक्रेनी युद्ध तक ले गई, जैसा कि 217 ईसा पूर्व में पद ग्यारह की पूर्ति के रूप में राफिया की लड़ाई द्वारा निरूपित है। पद ग्यारह से लेकर पद सोलह तक वही है जो पद ग्यारह से लेकर पद बाईस तक है; इसलिए, पद चालीस का गुप्त इतिहास, जैसा कि पद ग्यारह से सोलह में निरूपित है, वही पद ग्यारह से बाईस तक के इतिहास के रूप में भी निरूपित है। पद चालीस का गुप्त इतिहास पद ग्यारह से बाईस तक में निरूपित है।

अध्याय ग्यारह से बाईस तक

वह गुप्त इतिहास उत्पत्ति, मत्ती, प्रकाशितवाक्य और The Desire of Ages के अध्याय ग्यारह से बाईस में भी निरूपित किया गया है। “ग्यारह से बाईस” अध्यायों के वे चारों साक्षी उस गुप्त इतिहास के साथ सामंजस्य रखते हैं, क्योंकि गुप्त इतिहास दानियेल 11 में ग्यारह से बाईस पद हैं। उन चारों साक्षियों का केंद्र सदा वाचा के चिन्ह की पहचान कराता है, जो उत्पत्ति के अध्याय ग्यारह में निम्रोद द्वारा निरूपित मृत्यु की वाचा से आरम्भ होकर प्रकाशितवाक्य के अध्याय सत्रह में रोम की वेश्या पर समाप्त होता है।

सत्रह

मत्ती को छोड़कर, चारों साक्षी अध्याय सत्रह को उस अवधि का मध्यबिंदु पहचानते हैं जिसका वे चित्रण करते हैं। संख्या सत्रह उन तीन दो सौ पचास-वर्षीय भविष्यवाणियों में भी तीन बार पाई जाती है जो 457 ईसा-पूर्व, 64 और 1776 में आरम्भ हुई थीं। उन रेखाओं में से दो, (पहली और अंतिम), एक मध्यबिंदु की पहचान करती हैं, जब 457 ईसा-पूर्व की पहली रेखा 207 ईसा-पूर्व में समाप्त हुई और 1776 की अंतिम रेखा 2026 में समाप्त होती है। 207 ईसा-पूर्व राफिया और पैनियम की लड़ाइयों के बीच था, और 2026 संयुक्त राज्य अमेरिका के अंतिम राष्ट्रपति का मध्यकाल है।

तीनों दो-सौ-पचास-वर्षीय रेखाओं के भीतर, टॉलेमी ने सत्रह वर्ष तक राज्य किया। नीरो की रेखा में 313 और 330 के बीच सत्रह वर्ष हैं, और 217 ईसा पूर्व में राफिया के युद्ध तथा 200 ईसा पूर्व में पैनियम के युद्ध के बीच भी सत्रह वर्ष थे। अध्याय ग्यारह से बाईस तक के चार साक्षियों में से तीन अपने ठीक मध्यबिंदु को अध्याय सत्रह के रूप में चिह्नित करते हैं। इसलिए, पद चालीस का गुप्त इतिहास उसी अध्याय के पद ग्यारह से बाईस में निरूपित है, और अध्याय ग्यारह से बाईस के चारों साक्षी उन्हीं पदों के साथ संरेखित होते हैं। तीनों 250-वर्षीय भविष्यवाणियों में से प्रत्येक की पूर्ति उसी एक ही इतिहास के साथ संरेखित होती है। मध्यबिंदु को एक मार्गचिह्न के रूप में विशेष बल दिया गया है, और इसे विशेष रूप से परमेश्वर की प्रजा की वाचा और मुहर के प्रतीक के रूप में पहचाना गया है।

दानियेल बारह अध्याय

दानियेल अध्याय बारह के पद सात, ग्यारह और बारह एक लाख चवालीस हजार के मुद्रांकन की अंतिम अवधि की पहचान करते हैं। पद सात 31 दिसंबर, 2023 की पहचान करता है, और पद बारह 18 जुलाई, 2020 की पहचान करता है। पद सात का वह बिखराव, जो 31 दिसंबर, 2023 को समाप्त हुआ और जो 18 जुलाई, 2020 को आरम्भ हुआ था, दानियेल बारह में स्थित भविष्यवाणी संबंधी समय के इन तीन पदों के अल्फा और ओमेगा में निरूपित

किया गया था। 1,290 वर्षों वाला मध्य पद 1989 से शीघ्र आने वाले रविवार के कानून तक के इतिहास को 30 के रूप में पहचान करता है, और फिर मानवीय अनुग्रह-अवधि के समापन तक 1,260 को। तीस वर्ष, जो एक लाख चवालीस हजार के याजकत्व की आयु का प्रतिनिधित्व करते हैं, और 1260 वर्ष, जो प्रकाशितवाक्य तेरह के प्रतीकात्मक बयालीस महीनों का प्रतिरूप हैं।

बारह सौ साठ वर्षों के पश्चात् 30 की द्वैध भविष्यवाणी, अब्राहम और पौलुस की 400 और 430 वर्षों की द्वैध वाचा-भविष्यवाणी का एक प्रतीक है। दानिय्येल बारह में समय से संबंधित तीन पदों का मध्यबिंदु तेरहवें अक्षर के विद्रोह का प्रतिनिधित्व करता है, साथ ही एक लाख चवालीस हजार की वाचा और मुहरबंदी पर भी बल देता है। ये तीनों पद गुप्त इतिहास के साथ भी संरेखित होते हैं, और इस बात पर बल के एक और साक्षी को जोड़ते हैं कि मध्यबिंदु वाचा का एक प्रतीक है।

वसंत और शरद् ऋतु

इन सभी रेखाओं के साथ हमें लैव्यव्यवस्था अध्याय तेईस में स्थित वसंत और पतझड़ के पर्वों के तीन साक्षियों को भी सम्मिलित करना चाहिए, जो क्रूस के इतिहास में पिन्तेकुस्त के काल के साथ संरेखित और संयुक्त हैं। वहाँ अध्याय तेईस है, जो मसीह के प्रायश्चित्त के कार्य का एक प्रतीक है। यह अध्याय चवालीस पदों से बना है, जो प्रतीकात्मक रूप से 22 अक्टूबर, 1844 का प्रतिनिधित्व करते हैं। 22 अक्टूबर अक्टूबर के 22 दिनों को दर्शाता है, जो पहले दिन से आरम्भ होकर बाईसवें दिन पर समाप्त होते हैं, इस प्रकार हिब्रू वर्णमाला की प्रमाणिकता को धारण करते हुए। अक्टूबर, जो दसवाँ महीना है, जब बाईसवें दिन से गुणा किया जाता है, तो 220 होता है।

इब्रानी पंचांग में सातवें महीने का दसवाँ दिन प्रायश्चित्त का दिन था, और सात गुणा दस सत्तर होता है, जो परीक्षाकाल के समय का एक प्रतीक है। तेईस सौ वर्ष 1844 में समाप्त हुए, जब तीसरा स्वर्गदूत पहुँचा, जैसा कि उस अवधि का आरम्भ कराने वाली तीसरी आज्ञापति द्वारा प्रतिरूपित किया गया था। दो हजार तीन सौ दिनों के आरम्भ में प्राचीन शाब्दिक इस्राएल को तब परीक्षाकाल के रूप में निर्धारित सत्तर सप्ताह प्रदान किए गए थे, और उन दिनों के अंत में आधुनिक आत्मिक इस्राएल के लिए परीक्षाकाल सातवें महीने के दसवें दिन द्वारा निरूपित किया गया था, जो सत्तर के तुल्य है। 22 अक्टूबर, 1844, शीघ्र आने वाले रविवार के विधान का प्रतिरूप है, और वहीं पर सेवन्थ-डे एडवेंटिज़्म के लिए परीक्षाकाल के सांकेतिक सत्तर वर्ष समाप्त होते हैं, जैसा कि यह यहूदियों के लिए तब हुआ था जब स्तिफनुस पर पथराव किया गया था।

1844 उस अवधि का प्रतिनिधित्व करता है जब दो स्वर्गदूत आए, दूसरा पहली निराशा के समय और तीसरा महान निराशा के समय। “44” एक द्विगुणित संदेश का प्रतिनिधित्व करता है, जैसा कि दानिय्येल ग्यारह के चौवालीसवें पद में पूर्व और उत्तर से आने वाली खबरों द्वारा निरूपित है। लैव्यव्यवस्था तेईस में चवालीस पद हैं, जो पवित्र पर्वों को वसंत और पतझड़ में विभाजित करते हैं। वे चवालीस पद एक द्विगुणित संदेश का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये दोनों ऋतुएँ बाईस-बाईस पदों द्वारा निरूपित हैं, इसलिए वसंत और पतझड़—दोनों पर्व—इब्रानी पंचांग के बाईस अक्षरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब बाईस पदों के वे दो साक्षी पेंतेकोस्त की ऋतु के साथ एक साथ लाए जाते हैं, तब वे तीन चरणों की एक रूपरेखा उत्पन्न करते हैं।

पहला मार्गचिह्न तीन भागों से बना है, जिसके बाद पाँच दिन आते हैं; और यही बात तीनों मार्गचिह्नों में से अंतिम पर भी लागू होती है। मध्य मार्गचिह्न वे तीस दिन हैं जिनमें मसीह आमने-सामने उन लोगों को शिक्षा देते हैं जो विजयी कलीसिया में सेवा के लिए याजकों के रूप में अभिषिक्त किए जा रहे हैं। लैव्यव्यवस्था तेईस, पद चालीस के गुप्त इतिहास के साथ संरेखित होता है।

मध्यबिंदु

उत्पत्ति की ग्यारहवें अध्याय से बाईसवें अध्याय तक की रेखा का मध्यबिंदु अध्याय सत्रह है, जहाँ इब्राहीम की तीन-चरणीय वाचा का दूसरा चरण और खतने का चिह्न स्थापित किया गया। ग्यारहवें से बाईसवें अध्याय तक स्थित समस्त पदों का ठीक मध्य उत्पत्ति 17:22 है:

परन्तु मैं अपनी वाचा इसहाक के साथ स्थापित करूँगा, जिसे सारा अगले वर्ष इसी नियत समय पर तेरे लिये उत्पन्न करेगी। और वह उससे बातें करके समाप्त हुआ, और परमेश्वर अब्राहम के पास से ऊपर चला गया। उत्पत्ति 17:22।

परमेश्वर ने पद एक में अब्राहम से बोलना आरम्भ किया और पद बाईस में अपनी वार्ता समाप्त की; अतः खतने की वाचा का समस्त संवाद इब्रानी वर्णमाला के बाईस अक्षरों के भविष्यसूचक संदर्भ के भीतर स्थापित किया गया, जबकि उन बाईस पदों का विषय खतने की वह रीति था, जो आठवें दिन पूरी की जानी थी। उत्पत्ति के इस खंड का केंद्र अथवा मध्यबिंदु, अब्राहम की खतने की वाचा द्वारा निरूपित, एक लाख चवालीस हजार के साथ परमेश्वर के वाचागत संबंध में है। उत्पत्ति की ग्यारहवें से बाईसवें अध्यायों तक की अध्याय-रेखा का मध्यबिंदु अध्याय सत्रह है, और उस अध्याय का पूर्ण मध्यबिंदु पद बाईस है, जहाँ परमेश्वर अब्राहम के साथ वाचा की अपनी वार्ता विराम देते हैं; इस प्रकार मध्यबिंदु को इब्रानी वर्णमाला के बाईस अक्षरों के संदर्भ में स्थापित किया गया है। और उन बाईस पदों का मध्यबिंदु, निस्संदेह, पद ग्यारह है।

और तुम अपनी खतना की चमड़ी का खतना करोगे; और वह मेरे और तुम्हारे बीच की वाचा का चिन्ह होगा। उत्पत्ति 17:11.

बाइबल में ग्यारहवें से बाईसवें अध्यायों के चार खंडों के मध्यबिंदुओं में मध्यबिंदु के विचार को पूर्ण करने के लिए तीन पद सम्मिलित हैं।

यह मेरी वाचा है, जिसे तुम मेरे और अपने बीच, और अपने बाद अपने वंश के साथ मानोगे: तुम में से प्रत्येक पुरुष का खतना किया जाए। और तुम अपनी चमड़ी का खतना करना; और यह मेरे और तुम्हारे बीच वाचा का चिन्ह ठहरेगा। और तुम में पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रत्येक आठ दिन का पुरुष बालक खतना किया जाए, चाहे वह घर में उत्पन्न हुआ हो, या किसी परदेसी से धन देकर मोल लिया गया हो, जो तेरे वंश का न हो। उत्पत्ति 17:10-12.

एक टोकन एक चिन्ह है, जो एक ध्वज-चिह्न का प्रतिनिधित्व करता है। यह अनुच्छेद उस ध्वज-चिह्न के विषय में है, जो एक लाख चवालीस हजार हैं। नर बालक का खतना आठवें दिन किया जाना था, जैसे नूह की वाचा जहाज़ में स्थित आठ प्राणियों के साथ थी; इस प्रकार संख्या आठ का प्रयोग नूह-कालीन वाचा को अब्राहीमी वाचा के साथ जोड़ने के लिए किया गया। उन्हें फिलादेल्फियाई होना है, क्योंकि उनका खतना किया जाना है, जिसे पौलुस देह के क्रूसीकरण के प्रतीक के रूप में पहचानता है। जब देह क्रूस पर चढ़ा दी जाती है, तब मसीह की दिव्यता भीतर होती है, और वही संयोग ध्वज-चिह्न है; क्योंकि जैसा कि सिस्टर व्हाइट कहती हैं, "When Christ character is perfectly reproduced in His children, He will return for them."

"मानव स्वभाव भ्रष्ट है, और एक पवित्र परमेश्वर के द्वारा न्यायोचित रीति से दोषी ठहराया गया है। परन्तु पश्चात्ताप करने वाले पापी के लिए प्रबन्ध किया गया है, ताकि परमेश्वर के एकलौते पुत्र के प्रायश्चित्त पर विश्वास के द्वारा वह पापों की क्षमा प्राप्त करे, धर्मी ठहराया जाए, स्वर्गीय परिवार में दत्तक ग्रहण किया जाए, और परमेश्वर के राज्य का वारिस बने। चरित्र का रूपान्तरण पवित्र आत्मा की क्रिया के द्वारा सम्पन्न होता है, जो मानवीय कर्ता पर कार्य करती है, और उसकी इच्छा तथा इसे सम्पन्न होने देने की उसकी सहमति के अनुसार उसमें एक नया स्वभाव आरोपित करती है। परमेश्वर की छवि आत्मा में पुनःस्थापित की जाती है, और दिन-प्रतिदिन वह अनुग्रह के द्वारा दृढ़ और नया किया जाता है, तथा और भी अधिक पूर्ण रीति से धर्म और सच्ची पवित्रता में मसीह के चरित्र को प्रतिबिम्बित करने योग्य बनाया जाता है।"

“वह तेल, जिसकी इतनी आवश्यकता उन लोगों को है जिन्हें मूर्ख कुँवारियों के रूप में दर्शाया गया है, कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे बाहर से लगा लिया जाए। उन्हें सत्य को आत्मा के पवित्रस्थान में लाना है, ताकि वह शुद्ध करे, परिष्कृत करे, और पवित्र ठहराए। उन्हें सिद्धान्तमात्र की आवश्यकता नहीं है; उन्हें बाइबल की वे पवित्र शिक्षाएँ चाहिए, जो अनिश्चित, असंबद्ध मत नहीं हैं, वरन् जीवित सत्य हैं, जिनमें वे अनन्त हित सम्मिलित हैं जिनका केंद्र मसीह में है। उसी में ईश्वरीय सत्य की पूर्ण व्यवस्था है। मसीह में विश्वास के द्वारा आत्मा का उद्धार, सत्य की भूमि और खंभा है। जो मसीह में सच्चा विश्वास करते हैं, वे उसे चरित्र की पवित्रता और परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारिता के द्वारा प्रकट करते हैं। वे समझते हैं कि सत्य, जैसा कि वह यीशु में है, स्वर्ग तक पहुँचता है और अनन्तता को अपने घेरे में लेता है। वे समझते हैं कि मसीही का चरित्र, मसीह के चरित्र का प्रतिनिधित्व करे, और अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण हो। उन्हें अनुग्रह का तेल प्रदान किया जाता है, जो कभी न बुझनेवाली ज्योति को बनाए रखता है। विश्वासी के हृदय में पवित्र आत्मा उसे मसीह में पूर्ण बनाता है। यह कोई निश्चित प्रमाण नहीं है कि कोई पुरुष या स्त्री मसीही है, केवल इसलिए कि उत्तेजक परिस्थितियों में वह गहन भावोत्तेजना प्रकट करता या करती है। जो मसीहतुल्य है, उसके प्राण में एक गहरा, दृढ़निश्चयी, धैर्यवान तत्त्व होता है, तौभी उसे अपनी दुर्बलता का बोध रहता है, और वह शैतान के द्वारा धोखा खाकर और भरमाया जाकर आत्म-विश्वास करने के लिए प्रेरित नहीं होता। उसे परमेश्वर के वचन का ज्ञान है, और वह जानता है कि वह तभी सुरक्षित है जब वह अपना हाथ यीशु मसीह के हाथ में रखता है, और उस पर दृढ़ पकड़ बनाए रखता है।

“चरित्र संकट के द्वारा प्रकट होता है। जब आधी रात को गंभीर स्वर ने यह घोषणा की, ‘देखो, दूल्हा आता है; उससे भेंट करने के लिये बाहर निकलो,’ तब सोई हुई कुँवारियाँ अपनी नींद से जाग उठीं, और यह प्रकट हो गया कि किसने उस घटना के लिये तैयारी की थी। दोनों दल अचानक पकड़े गए, परन्तु एक आपातकाल के लिये तैयार था, और दूसरा बिना तैयारी के पाया गया। चरित्र परिस्थितियों के द्वारा प्रकट होता है। आपात स्थितियाँ चरित्र की वास्तविक धातु को उजागर कर देती हैं। कोई आकस्मिक और अप्रत्याशित विपत्ति, शोक, या संकट, कोई अनपेक्षित बीमारी या पीड़ा, ऐसी कोई बात जो प्राण को मृत्यु के आमने-सामने ला खड़ा करे, चरित्र की सच्ची आंतरिकता को प्रकट कर देगी। यह स्पष्ट हो जाएगा कि परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञाओं में कोई वास्तविक विश्वास है या नहीं। यह भी प्रकट हो जाएगा कि प्राण अनुग्रह के द्वारा संभाला जाता है या नहीं, और क्या दीपक के साथ पात्र में तेल है।”

“परीक्षा के समय सब पर आते हैं। परमेश्वर की परीक्षा और परख के अधीन हम अपना आचरण कैसे रखते हैं? क्या हमारे दीपक बुझ जाते हैं? अथवा क्या हम उन्हें अब भी जलाए रखते हैं? क्या हम उस से, जो अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण है, अपने संबंध के द्वारा प्रत्येक आकस्मिक संकट के लिए तैयार हैं? पाँच बुद्धिमान कुँवारियाँ पाँच मूर्ख कुँवारियों को अपना चरित्र नहीं दे सकीं। चरित्र हमें व्यक्तियों के रूप में स्वयं गढ़ना होता है। उसे किसी दूसरे को हस्तांतरित नहीं किया जा सकता, चाहे उसका स्वामी ऐसा बलिदान करने को इच्छुक ही क्यों न हो। जब तक दया ठहरी हुई है, तब तक हम एक-दूसरे के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। हम मसीह के चरित्र का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। हम भूल करने वालों को विश्वासयोग्य चेतावनियाँ दे सकते हैं। हम समस्त धीरज और उपदेश के साथ ताड़ना दे सकते हैं, डाँट सकते हैं, पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं को हृदय तक पहुँचा सकते हैं। हम हार्दिक सहानुभूति दे सकते हैं। हम एक-दूसरे के साथ और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। सावधानीपूर्वक जीवन जीकर, पवित्र बातचीत बनाए रखकर, हम यह उदाहरण दे सकते हैं कि एक मसीही को कैसा होना चाहिए; परंतु कोई भी व्यक्ति दूसरे को अपने चरित्र की छाप नहीं दे सकता। आइए, हम इस तथ्य पर समुचित रीति से विचार करें कि हमें समूहों के रूप में नहीं, वरन् व्यक्तियों के रूप में उद्धार पाना है। हमारा न्याय उस चरित्र के अनुसार किया जाएगा जिसे हमने गढ़ा है। आत्मा को अनंतकाल के लिए तैयार करने की उपेक्षा करना, और मृत्युशय्या पर पहुँचने तक परमेश्वर के साथ अपनी शांति स्थापित करने को टालते रहना, अत्यंत संकटपूर्ण है। जीवन के प्रतिदिन के व्यवहारों के द्वारा, उस आत्मा के द्वारा जिसे हम प्रकट करते हैं, हम अपनी अनंत नियति का निर्धारण करते हैं। जो थोड़े में विश्वासयोग्य है, वह बहुत में भी विश्वासयोग्य है। यदि हमने मसीह को अपना आदर्श बना लिया है, यदि हम वैसे ही चले और काम करते रहे हैं जैसा उसने अपने जीवन में हमें उदाहरण देकर दिखाया है, तो हम उन गंभीर आश्चर्यों का सामना कर सकेंगे जो हमारे अनुभव में हम पर आएँगे, और अपने हृदय से कहेंगे, ‘मेरी नहीं, परंतु तेरी ही इच्छा पूरी हो।’”

“यह अनुग्रह-अवधि का समय है, अर्थात् वही समय जिसमें हम जी रहे हैं, जब हमें उद्धार की शर्तों पर शान्तचित्त होकर मनन करना चाहिए, और परमेश्वर के वचन में निर्धारित नियमों के अनुसार जीवन व्यतीत करना चाहिए। हमें अपने को, घंटे-घंटे और दिन-प्रतिदिन, सावधानीपूर्वक अनुशासन के द्वारा, प्रत्येक कर्तव्य का पालन करने के लिए शिक्षित और प्रशिक्षित करना चाहिए। हमें परमेश्वर तथा यीशु मसीह को, जिसे उसने भेजा है, जानने वाले बनना चाहिए। प्रत्येक परीक्षा में यह हमारा विशेषाधिकार है कि हम उस पर आश्रय लें जिसने कहा है, ‘वह मेरी शक्ति को पकड़ ले, जिससे वह मेरे साथ मेल कर ले; और वह मेरे साथ मेल कर लेगा।’ प्रभु कहता है कि वह हमें पवित्र आत्मा देने के लिए उतना ही नहीं, वरन् माता-पिता के अपनी सन्तानों को रोटी देने से भी अधिक इच्छुक है। इसलिए आओ, हम अपने दीपकों के साथ अपने पात्रों में अनुग्रह का तेल रखें, जिससे हम उन लोगों में न पाए जाएँ जो मूर्ख कुँवारियों के रूप में चित्रित किए गए हैं, जो दूल्हे से भेंट करने के लिए निकलने को तैयार न थीं।”
Review and Herald, September 17, 1895.

एक लाख चवालीस हजार का ध्वज, जिनका पूर्वरूप अब्राहम के खतने और जहाज़ पर की आठ आत्माओं द्वारा प्रकट किया गया था, उस दृष्टान्त की बुद्धिमान कुँवारियाँ हैं, जो शीघ्र आने वाले संकट में मसीह के चरित्र को सिद्ध रूप से प्रतिबिम्बित करती हैं। यह सर्वथा उपयुक्त है कि सिस्टर व्हाइट ने उस अनुच्छेद का समापन यशायाह का उद्धरण देकर किया, क्योंकि वह एक ऐसा अंश है जो सीधे एक लाख चवालीस हजार के मुहरबन्द किए जाने के समय की ओर संकेत करता है।

उस दिन तुम उसके विषय में यह गीत गाना: लाल दाखमधु की एक दाख की बारी। मैं, यहोवा, उसकी रक्षा करता हूँ; मैं हर क्षण उसे सींचूँगा; ऐसा न हो कि कोई उसकी हानि करे, मैं रात-दिन उसकी रखवाली करूँगा। मुझ में क्रोध नहीं है; युद्ध में कौन मेरे विरुद्ध ऊँटकटारे और काँटे खड़े करेगा? मैं उन पर चढ़ जाऊँगा, मैं उन सब को एक साथ जला दूँगा। अथवा वह मेरी शक्ति को पकड़ ले, ताकि वह मुझ से मेल करे; और वह मुझ से मेल कर लेगा। वह याकूब से उत्पन्न होनेवालों को जड़ पकड़वाएगा; इस्राएल फूलेगा और कोंपलें निकालेगा, और जगत के मुख को फल से भर देगा। क्या उसने उसे वैसे ही मारा है, जैसे उसने उन लोगों को मारा जिन्होंने उसे मारा था? अथवा क्या वह उसी प्रकार घात किया गया है, जैसे उसके द्वारा घात किए गए लोगों का वध हुआ? परिमाण में, जब वह बढ़ने लगे, तब तू उसका न्याय करेगा; पूर्वी पवन के दिन वह अपनी प्रचण्ड वायु को रोक लेता है। इस कारण याकूब का अधर्म इसी से दूर किया जाएगा; और उसके पाप को दूर करने का सारा फल यह होगा कि जब वह वेदी के सब पत्थरों को पीसे हुए खड़िया-पत्थरों के समान कर देगा, तब अशेरा-स्तंभ और मूर्तियाँ खड़ी न रह सकेंगी। तौभी गढ़वाला नगर उजाड़ होगा, और निवास-स्थान छोड़ा हुआ और जंगल के समान पड़ा रहेगा; वहाँ बछड़ा चराई करेगा, वहीं वह लेट रहेगा, और उसकी डालियों को चट कर जाएगा। जब उसकी टहनियाँ सूख जाएँगी, तब वे तोड़ी जाएँगी; स्त्रियाँ आकर उन्हें आग में झोंक देंगी; क्योंकि यह ऐसी प्रजा है जिसमें समझ नहीं; इस कारण उसका कर्ता उन पर दया न करेगा, और उसका रचयिता उन पर अनुग्रह न करेगा। यशायाह
27:2-11.

“पूरब की वायु के दिन” में, जब याकूब का अधर्म दूर किया जा रहा है, और “निर्बुद्धि लोगों” के दूसरे वर्ग को इकट्ठा करके जलाया जा रहा है, तभी एक लाख चवालीस हजार के मुद्रांकन का समय है। उस अवधि में, जो कोई मसीह के साथ मेल करना चाहता है, वह ऐसा कर सकता है, परन्तु अन्तिम घटनाएँ तीव्र गति से घटित होती हैं।

जब याजक सेवा आरम्भ करते थे तब उनकी आयु तीस वर्ष की होनी थी, और एक लाख चवालीस हजार पतरस के उस याजकों के राज्य हैं जो अंतिम दिनों में परमेश्वर के साथ वाचा को नया करते हैं।

तुम भी जीवित पत्थरों के समान एक आत्मिक भवन बनते जाते हो, ताकि एक पवित्र याजकवर्ग होकर ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को स्वीकार्य हों। 1 पतरस 1:5।

याजकों को आठ-दिवसीय अभिषेक-सेवा के लिए सेवा करने को तैयार किया गया था; अतः संख्या आठ उस अभिषिक्त याजकत्व का प्रतीक है जो सन्दूक के भीतर है।

हारून की लाठी

एक लाख चवालीस हजार के अभिषिक्त याजकत्व का प्रतीक वाचा के सन्दूक के भीतर हारून की उस लाठी द्वारा किया गया है जिसमें कलियाँ फूटी थीं। जब हारून की लाठी में कलियाँ फूटीं, तब उसने हारून और इस्राएल के गोत्रों की अन्य लाठियों के बीच, जिनमें कलियाँ नहीं फूटी थीं, एक भेद प्रकट किया। पवित्रशास्त्र में पौधों में कली फूटने का कारण वर्षा ही बताई गई है।

सब भविष्यद्वक्ता अंतिम दिनों का ही संबोधन करते हैं; इसलिए हारून की याजकत्व की छड़ी, एक लाख चवालीस हजार के अभिषेक का प्रतिनिधित्व करती है, ऐसी परिस्थिति में जो कर्मल पर एलिय्याह और 1844 के मिलेराइटों के साथ सामंजस्य रखती है। यह उस बिंदु को संबोधित करती है जब पिछली वर्षा के सच्चे और झूठे संदेशों के बीच स्पष्ट भेद प्रकट होता है। यह भेद योएल द्वारा प्रकट किया जाता है, जब वह एक वर्ग से “नया दाखमधु” काट डाले जाने की पहचान करता है। वह वर्ग, जिसके मुख से नया दाखमधु काट डाला जाता है, यशायाह के एप्रैम के मतवाले हैं। वे वही लोग भी हैं जिन्होंने पिन्तेकुस्त के समय चेलों पर मतवाला होने का आरोप लगाया था, और वे 1888 के विद्रोही हैं, जिन्होंने अपने पितरों का अनुसरण किया, जो 1863 के विद्रोही थे। भविष्यद्वक्ता की वे सब रेखाएँ उस रेखा के साथ मेल खाती हैं, जिसे सिस्टर व्हाइट उस समय घटित होने वाली ठहराती हैं जब संसार यह जान लेता है कि ऐडवेंटिज़्म लगभग एक सौ पच्चीस वर्षों से नैशविल के अग्निगोलों के विषय में जानता रहा है और उसने कुछ नहीं कहा।

८, अस्सी और ८१

तीस संख्या और आठ संख्या उन एक सौ चवालीस हजार की याजकाई के प्रतीक हैं, जो अंतिम दिनों का ध्वज हैं, और जो दिव्यता तथा मानवता के संयोग का प्रतिनिधित्व करते हैं। आठ संख्या, अस्सी संख्या का दशमांश है; और अस्सी संख्या उन अस्सी पराक्रमी याजकों की संख्या है, जिन्होंने महायाजक के साथ मिलकर राजा उज्जिय्याह का सामना किया, जब उसने पवित्र स्थान में धूप चढ़ाने का प्रयत्न किया। इक्यासी, विजयी कलीसिया की याजकाई के संदर्भ में, मानवता के साथ संयुक्त दिव्यता का प्रतिनिधित्व करती है। उज्जिय्याह के विद्रोह का इतिहास उस इक्यासी की याजकाई को उसी संकट में जोड़ता है, जो राफिया के युद्ध के ठीक पश्चात् टॉलेमी के विद्रोह के साथ समरेखित होता है। सब भविष्यद्वक्ता अंतिम दिनों की पहचान कराते हैं; इसलिए, दिव्यता और मानवता के संयोग की याजकाई—जो विजयी कलीसिया की याजकाई है और जो अस्सी मानवीय याजकों तथा एक दिव्य महायाजक से मिलकर बनी है—उस इतिहास में पहचानी जाती है जो 2014 में आरम्भ हुआ, जब यूक्रेनी युद्ध प्रारम्भ किया गया।

उत्पत्ति की बारह-अध्यायी श्रृंखला का मध्य अध्याय सत्रहवाँ अध्याय है। इस बारह-अध्यायी श्रृंखला का मध्य पद बाईसवाँ पद है। बाईसवाँ पद परमेश्वर और अब्राहम के बीच उस वार्तालाप के एक स्पष्ट अंत को चिह्नित करता है, जो पहले पद में आरम्भ हुआ था; इस प्रकार बाईसवाँ पद उस भविष्यद्वक्ता-संबंधी श्रृंखला के अंत की पहचान कराता है, जो इब्रानी वर्णमाला के बाईस अक्षरों की छाप धारण करती है। बाईस पदों की इस श्रृंखला का मध्य पद ग्यारहवाँ पद है, जो आगे चलकर उन तीन पदों का मध्य है जो एक लाख चवालीस हजार के ध्वजचिह्न की पहचान कराते हैं। इसलिए ग्यारहवाँ पद तीन विशिष्ट पदों का मध्य है, और ग्यारहवाँ पद न केवल उन बाईस पदों के, बल्कि उन तीन पदों के भी, जिनके भीतर वह स्थित है, प्रधान सत्य को व्यक्त करता है; इस प्रकार ग्यारहवाँ और बाईसवाँ पद को मुख्य विचार के आरम्भ और अंत के रूप में चिह्नित किया जाता है। अतः, सत्रहवाँ अध्याय में ग्यारहवाँ से बाईसवाँ पद तक, ग्यारहवाँ से बाईसवाँ अध्यायों का मुख्य विषय है।

मत्ती की पुस्तक में ग्यारहवाँ से बाईसवाँ अध्यायों के बीच का मध्य अध्याय सोलहवाँ अध्याय है।

तब उसने अपने चेलों को यह आज्ञा दी कि वे किसी मनुष्य से न कहें कि वही यीशु मसीह है। मत्ती 16:20.

उत्पत्ति के मध्यबिंदु की भाँति, बीसवाँ पद उस विशिष्ट वार्तालाप के समापन को चिह्नित करता है जो तेरहवाँ पद में उस समय आरम्भ हुआ था जब मसीह और चले कैसरिया फिलिप्पी पहुँचे थे।

जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेश में आया, तो उसने अपने चेलों से यह पूछकर कहा, “मनुष्य मुझे, अर्थात् मनुष्य के पुत्र को, क्या कहते हैं?” उन्होंने कहा, “कोई कहता है कि तू यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है; कोई एलियाह; और कोई यिर्मयाह, या भविष्यद्वक्ताओं में से एक।” उसने उनसे कहा, “परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?” शमौन पतरस ने उत्तर देकर कहा, “तू मसीह है, जीवते परमेश्वर का पुत्र।” यीशु ने उत्तर देकर उससे कहा, “धन्य है तू, शमौन बारयोना; क्योंकि मांस और लोहू ने यह तुझ पर प्रकट नहीं किया, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है। और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस है, और इसी चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। और मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा वह स्वर्ग में बाँधा जाएगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा वह स्वर्ग में खोला जाएगा।” तब उसने अपने चेलों को यह आज्ञा दी कि वे किसी से न कहें कि वही यीशु मसीह है। मत्ती 16:13-20।

राफिया और पानियम

मत्ती का मध्य खंड न केवल एक पृथक वार्तालाप और विषय का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि जैसे उत्पत्ति की गवाही का वाचागत प्रतीकवाद राफिया की लड़ाई के साथ मेल खाता है, वैसे ही मत्ती की वार्ता कैसरिया फिलिप्पी में होती है, जो पानियम है। दानिय्येल ग्यारह के पद पंद्रह का पानियम, मत्ती की बारह-अध्यायी रेखा का मध्यबिंदु है, और दानिय्येल ग्यारह के पद ग्यारह का राफिया, उत्पत्ति की बारह-अध्यायी रेखा का मध्यबिंदु है।

457 ईसा पूर्व में आरंभ हुए 250 वर्ष 207 ईसा पूर्व में समाप्त हुए, जो पद ग्यारह के राफिया और पद पंद्रह के पानियम के बीच का मध्यबिंदु है, जहाँ अब्राहम के खतने के चिन्ह और पतरस द्वारा मसीह के अंगीकार का संगम होता है। मत्ती की पुस्तक की वंशावली-रेखा में, पतरस उसके बपतिस्मा के समय मसीह, परमेश्वर के पुत्र, के प्रति अपनी पहचान की गवाही दे रहा है।

शमौन का अर्थ है “वह जो सुनता है” और बारयोना का अर्थ है “कबूतर का पुत्र।” शमौन वह था जिसने मसीह के बपतिस्मे का संदेश सुना, जब पवित्र आत्मा कबूतर के रूप में उतरा। मसीह का बपतिस्मा 11 अगस्त, 1840 का प्रतिरूप था, जब प्रकाशितवाक्य दस का बलवन्त स्वर्गदूत उतरा। वही स्वर्गदूत 9/11 को उतरा। पतरस उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो 9/11 को एक लाख चवालीस हज़ार की पीढ़ी के लिए परीक्षा लेनेवाले संदेश के रूप में पहचानते हैं।

पतरस उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो “पंक्ति पर पंक्ति” की कार्यविधि का प्रयोग करते हैं। वह कपोत का “पुत्र” है, इसलिए पुत्र होने के नाते वह प्रतीकात्मक रूप से अंतिम पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है। पतरस अंतिम पीढ़ी का एक प्रतीक है, और उसके नाम की प्रतीकात्मक संख्या के द्वारा वह एक लाख चवालीस हज़ार का प्रतिनिधित्व करता है। पतरस उस अंतिम पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है जो भविष्यवाणी की रेखा में मसीह के प्रकट होने पर सामर्थ्य-प्रदान के संदेश को सुनती है। पतरस ने मसीह के बपतिस्मा से संबंधित संदेश को पहचाना, और इस प्रकार पतरस यीशु को अभिषिक्त जन के रूप में पहचान सका, जो इब्रानी में मसीहा और यूनानी में क्राइस्ट है। पतरस उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो समझते हैं कि प्रकाशितवाक्य अठारह का वह स्वर्गदूत जो 9/11 पर उतरा था, वह 11 अगस्त, 1840 को भी उतरा था। पतरस उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो 9/11 को एक मार्गचिह्न के रूप में समझते हैं, जो केवल दो या तीन रेखाओं की गवाही से ही स्थापित होता है।

पतरस की स्वीकृति यह है कि 9/11 तीसरे हाय के आगमन की पहचान कराता है, जो अंतिम पीढ़ी के लिए परीक्षा का संदेश है। वही स्वीकृति वह स्थान है जहाँ नाम परिवर्तन होता है। अब्राहम राफिया में है और पतरस क्रूस से ठीक पहले पानियम में है। पानियम और क्रूस के बीच पतरस रूपान्तरण के पर्वत पर जाने वाला है। पानियम ही वह स्थान है जहाँ शमौन पतरस में बदल दिया जाता है, जब उसने अपनी पीढ़ी के लिए परीक्षा के संदेश के विषय में अपनी स्वीकृति दी। एक लाख चवालीस हज़ार के लिए वह परीक्षा का संदेश तीसरे हाय का इस्लाम है, जो भविष्यवाणी के इतिहास में 9/11 पर पहुँचा।

एडवेंटवाद की परीक्षा का आरम्भ 9/11 पर हुआ, और एडवेंटवाद की परीक्षा के अंत में तीसरे हाथ के इस्लाम का संदेश यह पहचान कराता है कि शमौन का नाम कब और कहाँ बदला जाता है। वह संदेश जिसे पतरस अंत में समझता है, और जिसका प्रतिरूप आरम्भ में 9/11 के संदेश द्वारा दिखाया गया था, नैशविल के अग्निगोलों का संशोधित संदेश है। वहीं तुरहियों का पर्व ध्वज के आरोहण और प्रायश्चित्त के दिन के बंद द्वार के साथ-साथ आ पहुँचता है।

हम अगले लेख में इन बातों को आगे जारी रखेंगे।